REVIEW OF RESEARCH
IMPACT FACTOR : 5.2331 (UIF) UGC APPROVED JOURNAL NO. 48514 ISSN: 2249-894X
VOLUME - 7 | ISSUE - 7 | APRIL - 2018

औरंगजेब कालीन जाट शक्ति के विद्रोहों का ब्रज प्रदेश पर आर्थिक प्रभाव–एक सामान्य अध्ययन

डॉ. नीरज कुमार गौड़
प्राचार्य , एच के एल कालेज ऑफ ऐजूकेशन,
(सम्बध्द पंजाब विश्वविद्यालय, चंड़ीगढ़) गुरूहरसहाय, फिरोजपुर. (पंजाब)

सारांश

जाट शक्ति देश की अमूल्य निधि है। यह देश का भरण–पोषण करती है। इसने प्रारम्भ से ही मातृभूमि की रक्षा के लिए प्राणों की आहूति दी है। जाट शक्ति आखिर कार जाट ही कहलाती है चाहे यह किसी भी धर्म या सम्प्रदाय में विभाजित हो जाये। मुगलकालीन ब्रज क्षेत्र के सन्दर्भ में जाट हिन्दू धर्म के पोषक, धर्म, संस्कृति व परम्पराओं के रक्षक रहे हैं उसमें हस्तक्षेप करने पर उन्होंने विद्रोह का झंड़ा बुलंन्द कर दिया। औरंगजेब के शासन काल में जाटों के विद्रोहों से इस क्षेत्र में भू राजस्व वसूलना असम्भव हो गया, व्यापारियों ने भी कर न अदा कर विद्रोहियों का साथ दिया। शाही भवनों, खजानों एवम राज मार्गों पर लूट पाट ने जाटों की शक्ति को और भी अभेद बना दिया। विद्रोहियों के अनवरत बलिदान ने जाट शक्ति को अत्यधिक बल प्रदान किया, आर्थिक रूप से जाट शक्ति को सशक्त बनाकर औरंगजेब की अर्थव्यवस्था एवं सैन्य शक्ति को निरन्तर पंगु बना दिया।

औरंगजेब की आर्थिक नीति निसंदेह हिन्दुओं को कुचलने वाली ही थी। उसने अपनी गद्दी सम्भालने वाले दिन से ही ब्रजप्रदेश के निवासियों को सताना प्रारम्भ कर दिया था। साम्राज्य हासिल करने के लिये जो युद्ध उसके भाईयों में चले, विशाल सेनाओं की भागदौड़ से जमींदारों, काश्तकारों तथा मजदूरों की फसलों को बुरी तरह से रौंदते गये। इस उहापौह की स्थिति में उसे स्वयं तो परिस्थितियों का गुलाम बना कर रख दिया था तथा यहॉ ब्रजक्षेत्र के निवासियों को भी आर्थिक रूप से खस्ताहाल बना दिया। मनुष्यों का खाद्यान्न और पशुओं को चारे के लिये भयंकर कष्ट सहना पड़ा। अनाज की कीमतों में इस दौरान अत्यधिक वृद्धि हो गई। शाही सीमाओं पर अधिकांश व्यपारियों से अत्यधिक कर वसूल किया गया। मुसीबत के मारे जाट, किसान व अन्य हिन्दू अपने परिवारों के भरण पोषण के लिये राहजनी, लूट इत्यादि कृत्यों में उतर आये। कारखानों में उत्पादित वस्तुओं के मूल्य बढ़ गये और व्यापारियों ने कर न अदा कर आंदोलनकारियों का ही साथ दिया। इस प्रकार औरंगजेब के शासन काल के प्रारम्भिक वर्षों में ही ब्रजक्षेत्र आर्थिक रूपेण कंगाल हो गया।

नन्दराम जाट जो कि माखनसिंह का प्रपौत्र था ने औरंगजेब के उत्तराधिकारी युद्ध के समय में स्वाधीनता का झण्डा अपने हाथों में ले लिया और जब समस्त मुगल कर्मचारी दाराशिकोह की हार के बाद भाग चुके थे, जाटशक्ति उस समय सर्वत्र लूटमार पर उतारू हो गई। इस प्रकार 1660 से 1665 ई0 के मध्य आर्थिक कारणों ने भी विद्रोह का झण्डा बुलन्द किया।

औरंगजेब ने दक्षिण अभियान के दौरान उत्तरी क्षेत्र के उसके प्रशासकगण अत्यन्त लापरवाह हो गये स्थिति इतनी हास्यास्पद हो चुकी थी कि राजस्व कर वसूली के लिये एक ही स्थान पर लगान वसूली का ठेका कई बार अलग–अलग व्यक्तियों को दे दिया जाता था। जिसको भी ठेका मिल जाता वह इस भय के कारण कि कहीं कोई अधिक रिश्वत देकर इस क्षेत्र का ठेका न ले, उस क्षेत्र में जाकर प्रत्येक सम्भव उचित अनुचित विधि से शीघ्रता–शीघ्र लगान वसूल कर लना चाहता था। प्रायः एक क्षेत्र से कई – कई बार लगान वसूल किया जाता था। जिस अपमान और अवहेलना की अनुभूति जाट, कृषकों को लगान वसूली के दौरान होती उससे सरल तो उनको प्राणों का उत्सर्ग करने में होती थी। एक ही वर्ष में कई–कई बार वसूली होती थी और लगान न देने पर अस्थिर नीति के कारण भूमि तक को नीलाम कर दिया जाता था तथा पशुओं को भी लगान वसूलकर्ता अमीन नीलाम तक करवा देते थे। भ्रष्टता इस कदर व्याप्त थी कि कोई सुनिशिचित नियम या प्रणाली जीवंत नहीं थी, और यह व्यवहारिक रूप से कृषक विरोधी ही थी। यही कारण है कि धन और मानहानि की कटु अनुभूति ने ब्रजप्रदेश की किसान जनता को मुगल शासन के विपरीत विद्रोह के मार्ग पर बढ़ा दिया। उसी समय लगान न देने वाले अनगिनत आंदोलन हुये जिन्हें शासन के इतिहासकारों ने विद्रोह की संज्ञा दी है।

दक्षिण के व्यस्ततम अभियान और अनेकों युद्धों के कारण औरंगजेब का राजकोष पूर्णतया खाली हो चुका था और दूसरी ओर से वह उत्तर भारत की ओर अपना ध्यान भी नहीं दे पा रहा था। दक्षिण की सैनिक कार्यवाहियों को पूर्णता प्रदान के लिये उत्तर भारत के शाही कैम्पों से अधिकाधिक कोष की मांग होती थी जिसे पूरा करने के लिये शाही शासक उत्तर भारत की किसान जनता को परेशान करते रहते थे। लगातार करों की अदायगी तथा बार–बार सेनाओं के आवागमन से हरी फसलों को रौंदा जाना कृषकों को अत्यंत निर्धन बनाता जा रहा था। किसानों के मिट्टी के बने घर शमशान बनने लगे और भ्रष्ट सामन्तों की हवेलियां

विलासता से जगमगाने लगीं। फलतः इस स्थिति ने ब्रजप्रदेश की जनता को विद्रोही बना दिया। साम्राज्य तथा सामन्त विरोधी शक्ति के रूप में शुद्ध किसान, जाट जनता और उनके साथ –साथ कन्धे से कन्धा मिलाकर चलने वाली ग्रामीण जातियों का एक सशस्त्र संगठन अस्तित्व में आ गया। जिसका उद्देश्य पतनशील मुगल संस्कृति तथा ह्रासोन्मुख मानव मूल्य समर्थक सामन्ती समाज की जन विरोधी नीतियों तथा गतिविधियों का विरोध करना था। यही संगठन ब्रजप्रदेश में भरतपुर राज्य में परिणित हो गया। औरंगजेब की मूर्खतापूर्ण आर्थिक नीति ने उसके शासन तंत्र को हिला कर रख दिया एक ओर जहॉ इस नीति ने प्रशासनिक तंत्र के उच्चाधिकारियों से निम्न कर्मचारियों तक भ्रष्ट बना दिया और मुसलमानों को भी शासन के प्रति गद्दार बना दिया वहीं दूसरी ओर हिन्दुओं ने अपने बुद्धि विवेक से अपना आर्थिक नुकसान न्यूनतम कर लिया। इस आर्थिक नीति के तहत प्रशासन ने हिन्दू और मुसलमान सौदागरों के बीच भेदभाव किया था। इससे पहले तो हिन्दुओं से आधा कर मुसलमानों को देना पड़ता था और कालान्तर में मुसलमानों को भी चुंगी से पूर्णतया मुक्त ही कर दिया। हिन्दू व्यापारी प्रायः मुगल अधिकारियों से मिलजुल कर चुंगी छुड़वा लेते थे या मुसलमान व्यपारियों के माल का नाम लगाकर निःशुल्क चुंगी करवा लिया करते थे। एक अन्य नीति के अनुसार हिन्दुओं से बगीचे की उपज का 20 प्रतिशत कर और मुसलमान व्यापारियों से 16.6 प्रतिशत कर लिया जाता था। जानवरों पर हिन्दुओं से पॉच प्रतिशत और मुसलमानों से असका आधा कर लिया जाता था। इस प्रकार इन प्रत्येक करों की वसूली में मुगल प्रशासकों की भ्रष्टता की वजह से लगातार आर्थिक नुकसान हो रहा था।

मुगल शासनप्रणाली के करों सम्बन्धी नीतियॉ जहॉ एक ओर शासन को आर्थिक रूप से कमजोर बनाती जा रही थी वहीं दूसरी ओर जाटों द्वारा मुगलशाही खजानों की लूट, मुगल सेनाओं की छुटपुट लड़ाइयों में पराजय व उनके अस्त्र–शस्त्रों की लूट और जाट व्यपारियों, कृषकों, मजदूरों इत्यादि का बचाया हुआ धन मुगल शासन को आर्थिक रूप से पंगु बनाता चला गया। जाट सरदारों ने 1668 ई0 से मुगल खजानों में लूट प्रारम्भ कर दी थी जो कि धीरे–धीरे बढ़ती चली गई और एक स्थिति यह आई कि राजाराम ने शाही राजमार्गों को लूटकर उन्हें एक तरीके से अपनी छावनी के रूप में स्थापित कर लिया। अन्ततः राजाराम का वह दुस्साहस पूर्ण कार्य जो उसने शाही मकबरें में घुसकर, अकबर की कब्र खोदकर अपार धन–सम्पदा प्राप्त कर औरंगजेब को आर्थिक रूप से भयंकर झटका दिया।

यहॉ उल्लेखनीय तथ्य है कि अधिकांशतः मुगल शासकों की आर्थिक नीति या औरंगजेब की आर्थिक नीति हिन्दुओं को प्रताड़ित करने की नीयत से बनाई गई थी, का ठीक विपरीत प्रभाव पड़ता प्रतीत होता है। शोधार्थी के दृष्टिकोण से हिन्दू, जाट, काशतकारों तथा व्यापारियों ने औरंगजेब की आर्थिक नीतियों के कमजोर बिन्दूओं का पूर्ण फायदा उठाया। जहॉ ये एक ओर ये हिन्दू होने के नाते 5 प्रतिशत चुँगी देते थे वही वे मुस्लिम व्यक्तियों का सहारा लेकर आधा राजस्व देते रहे और कुछ समय बाद मुस्लिमों को लालच देकर बहुत ही कम पैसों में उन्ही के नाम से पूरा राजस्व बचाने लगे। इसमें एक ओर तो औरंगजेब का आर्थिक तंत्र कमजोर पड़ता चला गया वहीं कर के रूप में बचा यह धन ब्रजप्रदेश जाटशक्ति को आर्थिक रूप से मजबूत बनाता चला गया और प्रभाव देखने में यह आया कि यह आर्थिक बचत उनको विद्रोह में सेना के संगठन में सहायक हुई। जिसके चलते हुए उन्होंने कुल किले एवं सैन्य साजो–समान की खरीद फरोख्त की।

औरंगजेब की इन आर्थिक नीतियों ने प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रूप से ब्रजप्रदेश की जाटशक्ति के विद्रोहो को संबल प्रदान किया। वहीं अन्य समानान्तर प्रभाव दिखाई दिए।

औरंगजेब ने ब्रजप्रदेश में जाट विद्रोहों को दबाने के लिए अतिरिक्त सेना एवं साधनों को जुटाया, उससे उसे अत्याधिक मात्रा में आर्थिक रूप से नुकसान उठाना पड़ा। क्योंकि स्वतन्त्रता प्रेमी विद्रोहियों द्वारा बार–बार के विद्रोहों से उसे निरन्तर धन एवंम न शक्ति का उपयोग ब्रजप्रदेश में करने को विवश होना पड़ा। इसके विपरीत ब्रजप्रदेश के जाट आन्दोलनकारियों ने शाही मार्गों में लूटपाट करके मुगल अर्थव्यवस्था को क्षत–विक्षत कर दिया। मुगलों को इन शाही मार्गों की रक्षा के लिए अतिरिक्त सुरक्षात्मक इन्तजाम करने पड़े। जिससे उनकी अर्थव्यवस्था स्वाभाविक रूप से डावांडोल होती गई।

जाट विद्रोहियों ने अपने क्षेत्रों में भू–राजस्व अदा न करके औरंगजेब को प्रत्यक्ष रूप से अर्थदण्ड प्रदान किया और यह अर्थदण्ड उसके सम्पूर्ण काल में लगभग अनवरत रूप से उसे मिलता रहा। गोकुल सिंह ने आगरा सूबे के अन्तर्गत अपनी सैन्य दुकड़ी संगठित करके किसानों एवं व्यापारियों से जबरन सुरक्षात्मक कर वसूल किया और यह कर उसने अपने क्रांतिकारी गतिविधियों में पूर्ण रूप से खर्च किया। उसने इस धन का उपयोग छोटी–छोटी गढ़ियो के निर्माण, अस्त्र–शस्त्र की खरीद–फरोख्त एवं भण्डारण के लिए किया।

औरंगजेब ब्रजप्रदेश में गोकुल सिंह, राजाराम, जोरावर सिंह, फतेह सिंह, चूरामन एवं अन्य जाट सरदारों की इस प्रकार की गतिविधियों से अपने पूरे शासन काल में निरन्तर परेशान रहा तथा इन सभी ने आर्थिक रूप से इसे पंगु बना दिया।

औरंगजेब को दक्षिण अभियानों के लिए अत्यधिक धन की आवश्यकता थी और यह धन उत्तरी भारत के ब्रजप्रदेश से प्राप्त करने में असमर्थ रहा। इसके बदले उसने जो सैनिक शक्ति यहॉ खर्च की अगर वह सैनिक शक्ति दक्षिण भारत के युद्धों में भी की होती तो शायद वहॉ का राजनैतिक परिदृश्य कुछ और ही होता।

इन जाट आन्दोलनकारियों को शाही मार्गों की लूटपाट एवं शाही खजानों से अपार धन–सम्पदा प्राप्त हुई।

विशन सिंह कछवाह ने ब्रजप्रदेश में अपने पॉच वर्षीय अभियान में लगभग 50 लाख रूपये अपने ऊपर कर्ज के रूप में चढ़ा लिए। क्योंकि उसकी 30 हजार की स्थाई सेना के वेतन व भत्तों को नियमित रूप से देने के लिए भू–राजस्व का नियमित वसूलना रूक गया था।

औरंगजेब के दक्षिण अभियान में व्यस्तता के कारण तथा उत्तरी भारत से उसे मनोवांछित भू–राजस्व प्राप्त न होने से उत्तरी भारत के शाही अधिकारी एवं कर्मचारी अपने चारित्रिक पतन द्वारा भ्रष्ट हो गए। जिसकी वजह से शाही अधिकारी तथा

फौजदारों की गुप्त सूचनाएं जाट विद्रोहियों तक पहुँचने लगी और उनकी गुप्त सूचनाओं के कारण मुगल सरदारों, फौजदारों एवं शाही खजाने को लूटकर उसका आधा हिस्सा मुगल अधिकारियों एवं कर्मचारियों को बाँट दिया करते थे।

ब्रजप्रदेश के जाट विद्रोहियों एवं शाही सेना के मध्य लगातार होने वाली झड़पों व संघर्षों से आसपास के क्षेत्र में खड़ी फसलों व काश्तकारी को अत्यन्त नुकसान होता था और कभी–कभी शाही अधिकारी नियमानुसार नुकसान की भरपाई भी करते थे।

अन्ततः कहा जा सकता है कि औरंगजेब की आर्थिक नीतियों के कारण जहाँ व्यापारियों, किसानों, काश्तकारों इत्यादि को सीधे तौर पर फायदा हुआ वहीं उन्होंने इन विद्रोहियों को हिन्दुत्व के नाम पर डराकर या स्वेच्छा से जो भी आर्थिक सहायता उपलब्ध कराई उससे मुगल राजस्व को कुछ न कुछ हानि अवश्य हुई। दूसरी ओर जाट विद्रोहियों की गतिविधियों को रोकने में खर्च की गई सैनिक शक्ति , भू–राजस्व वसूल न कर पाना या अदा न करना, गढ़ियों या किलों को संघठित करना शाही मार्गों की सुरक्षा के इन्तजामात करना, सूबेदारों, फौजदारों तथा शाही अधिकारियों की सुरक्षा व्यवस्था करना, ब्रजप्रदेश में शान्ति व्यवस्था बनाये रखने के लिए बार–बार प्रशासनिक परिवर्तन करना नवीन अस्त्र–शस्त्रों एवं पशुओं व खाद्यन्नों पर खर्च करना, शाही अधिकारियों व कर्मचारियों में घूसखोरी व भ्रष्टाचार का बढ़ना भी प्रत्यक्ष रूप से जाट विद्रोहियों के आर्थिक दुष्परिणाम प्रतीत होते हैं।

संन्दर्भ ग्रथ सूची–

1. इरफान हबीब : दि एग्रेरियन सिस्टम ऑफ मुगल इंण्डिया। (1556–1707 ई0) 1963 ई0।
2. प्रो0 इन्द्र विद्यावाचस्पति : मुगल साम्राज्य का क्षय और उसका कारण, 1949, हिन्दी ग्रथ, रत्नाकर कार्यालय, बम्बई।
3. डॉ एस0एल0 नागौरी : मुगलकालीन भारत, श्री सरस्वती प्रकाशन, दिल्ली, 2002।
4. के0ए0 निजामी : स्टडीज इन मेडीवल इण्डियन हिस्ट्री एण्ड कल्चर, इलाहबाद, 1966।
5. औरंगजेबनामा : अनुवादक मुंशी देवीप्रसाद, भाग 1–3, बम्बई, 1909।
6. मोरलैण्ड : द एग्ररियन सिस्टम ऑफ मुस्लिम इण्डिया।
7. गिरीश चन्द्र द्विवेदी : जनरल ऑफ इण्डियन हिस्ट्री।
8. झारखंण्डे चौबे एवं डॉ0 कन्हैयालाल श्रीवास्तव : मध्ययुगीन भारतीय समाज एवं संस्कृति, उ0प्र0 हि0 संस्थान, लखनऊ, 1979।
9. बी0 एन0 लूनिया : औरंगजेब आलमगीर, कमल प्रकाशन, इंदौर, 1981।
10. श्रीराम शर्मा : द रिलीजस पालिसी ऑफ द मुगल एम्परस।
11. सर जान स्ट्रेची : इण्डिया इटस एडमिनिस्ट्रेशन एण्ड प्रोग्रेस।
12. हिस्ट्री ऑफ फ्रीडम मूवमेन्ट इण्डिया, दिल्द 1।
13. हमीदा खातून नकवी : अरबराइजेशन एण्ड अर्वन सैन्टर्स अण्डर द मुगलस।
14. विपिन बिहारी सिन्हा : मध्यकालीन भारत, ज्ञानदा प्रकाशन, नई दिल्ली, 2001।
15. एम0एल0 राय चौधरी : द स्टेट एण्ड रिलीजन इन द मुगल इण्डिया।
16. फारूखी : औरंगजेब एण्ड हिज टाईम्स।
17. डब्ल्यू0एन0 हण्टर : द इंडियन मुसलमान्स।
18. डॉ0 जदुनाथ सरकार : औरंगजेब (हिस्ट्री ऑफ औरंगजेब) भाग 1–5, कलकत्ता।
19. डॉ0 जदुनाथ सरकार : फाल ऑफ द मुगल एम्पायर, भाग 2, हिन्दी अनुवाद, मुगल साम्राज्य का पतन, अनु0 डॉ0 मथुरा लाल शर्मा।
20. सी0 पी0 वैद्य : हिस्ट्री ऑफ मैडीवल हिन्दू इण्डिया।
21. जनरल ऑफ ऐशियाटिक सोसायटी ऑफ बंगाल, 1911।
22. द फाउण्डेशन ऑफ मुस्लिम रूल इन इण्डिया, हबीबुल्लाह।
23. के0एम0 अशरफ : लाइफ एण्ड कण्डीशंस ऑफ दी पीपुल ऑफ हिन्दुस्तान।
24. एफ0एस0 ग्राउस : मथुरा –ए–डिस्ट्रिक्ट मेमोयर, 1873–74।
25. कृष्ण दत्त वाजपेयी : ब्रज का इतिहास, अखिल भारतीय ब्रज साहित्य मण्डल, मथुरा, संवत 2011।
26. प्रभुदयाल मीतल : ब्रज का सांस्कृति इतिहास, राजकमल प्रकाशन, 19661।

डॉ. नीरज कुमार गौड़
प्राचार्य , एच के एल कालेज ऑफ ऐजूकेशन, सम्बध्द पंजाब विश्वविद्यालय, चंड़ीगढ़, गुरूहरसहाय, फिरोजपुर. (पंजाब)